आचार्य श्री तुलसी की प्रासंगिकता

*डॉ. प्रदीप मीणा

शोधपत्र–हिन्दी

बीसवीं सदी के एक अप्रतिहत व्यक्ति का नाम है आचार्य श्री तुलसी, जो परम्परा से जैन मुनि की साधना में निरंतर एक तेजस्वी संत की व्यापक सोच व मानवीय दृष्टिकोण के कारण जन–जन के प्रिय तथा लाखों की आस्था के केन्द्र एक धार्मिक नेता थे। एक आलोकधर्मी चेतना का नाम है आचार्य श्री तुलसी, जो जीवन–भर मूल्यहीनता के तमस को निगलते रहे और मानवता की धरती पर रोशनी की फसलें उगाते रहे।

जिस समय समूची दुनिया विश्वयुद्ध की लपटों में झुलस रही थी, भारतवर्ष अंग्रेजी दासता के उमस भरे वातावरण में सांस ले रहा था, राजस्थान छोटी–छोटी रियासतों में बंटा हुआ था, आपसी संघर्षो व आक्रमणों से उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी, चारों और समस्याओं/निराशाओं का गहरा कुहासा छाया हुआ था, उस समय राजस्थान राज्य के छोटे से कस्बे लाडनूं में एक मध्यम वर्गीय गृहलक्ष्मी मॉ वंदना ने एक अलौकिक शिशु को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया तुलसी। कार्तिक शुक्ला दूज की पश्चिम रात्रि, सर्वत्र अंधकार का साम्राज्य, अंधेरे से घिरा एक घर का एक कक्ष, जिस समय बालक जन्मा, कक्ष में टिमटिम जलता दीया भी बुझ गया।

संभवतः वह कह रहा था कि अंधकार में अवतरित होकर ही महापुरूष संसार को दिव्य ज्योति प्रदान करते हैं। जिस समय समूचा विश्व पूंजीवाद और साम्यवाद की दो अतियों के मध्य अंतर्द्वन्द्व की स्थिति में जी रहा था, उस समय आचार्य तुलसी के रूप में एक ऐसे महामानव ने जन्म लिया, जिसने समत्वयोग पर आधारित जीवनशैली का प्रतिपादन किया।

अभाव और अतिभाव जीवन समस्याओं से जूझते हुए विश्व–समुदाय को इन दिनों से अप्रभावित रहने की प्रेरणा दी, वे अत्यन्त करूणाशील संत थे, उन्होनें समाज में व्याप्त संवेदनशील मानवीय समस्याओं को सदा अपनी समस्याओं के रूप में स्वीकारा आसपास की पीड़ा और दर्द को स्वंय भोगा और उसको मिटाने का प्रयत्न किया। जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना की धर्म को कर्म के साथ जोड़ा जीवन को सादगी और संयम से जोड़ा। धार्मिक आस्थाओं को आचारसे जोड़ा। आदर्शों को जीवन व्यवहार से जोड़ा, एक साधारण परिवार में पैदा होकर भी जीवन के प्रत्येक पक्ष को एवं समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया, एक सामान्य प्राथमिकशाला में वर्णमाला और गणित का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने वाला वह होनहार बालक अपने गूढ़ विचारों व शिक्षाओं के कारण एक दिन विश्व प्रतिष्ठित महान धर्म गुरू बन गया।

आचार्य श्री तुलसी भारतीय विद्याओं के पारगामी विद्वान थे, मौलिक रचनाधर्मी थे, वे देश के मूर्धन्य विद्वानों/साहित्यकारों के पथ दर्शक थे तो जन–साधारण के बीच भी सहज सम्मानित थे। वे अपने जादुई व्यक्तित्व एवं विलक्षण कर्तव्य से सदैव सबके लिए आकर्षण का केन्द्र बने रहे। सभी उम्र और वर्ग के लोगों को अपनी नेह बरसाती और चमकीली ऑखों व प्रभावी वाणी से लुभा लेते थे, उनके संपर्क व्यापक और वृहद् थे, सनकालीन बड़े से बड़े राजनेता, धर्मनेता, उद्योगपति, विद्वान, साहित्यकार उनके बराबर सम्पर्क में रहे उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त कर विशिष्ट गौरव का अनुभव करते रहे।

सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक मूल्यों को जनजीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होनें अविस्मरणीय योगदान दिया जनता के दुःख दर्द और समस्याओं को जानने एवं उनका सही समाधान खोजने हेतु उन्होनें देशव्यापही पदयात्राएं की लोकजीवन को परखा उनके सतत् परिभ्रमणशील संचेतन चरणों में मानवता की धरती पर असंख्य ज्योति स्तम्भ खड़े कर दिए धार्मिक परम्पराओं के इतिहास में उन जैसा व्यक्तित्व लेकर आने वाले व्यक्ति कम होते हैं, वे जड़ क्रियाओं के उपासक नहीं, जीवन धर्म के पुजारी थे उनकी दृष्टि में धर्म या कर्म को प्राणवान बनाने वाले तत्व है सम्यक् ज्ञान और सही लक्ष्य वे धर्म को जीवन की कला, प्रेम व सहज स्वभाव के रूप में स्वीकार करते थे।

आचार्य श्री तुलसी अध्यात्म के महान प्रवक्ता थे उनके नेत त्व में अध्यात्म का नया अध्याय प्रस्फुरित हुआ उन्होनें अध यात्म को मानसिक शान्ति, सामाजिक स्वास्थ्य एवं वैज्ञानिक संदर्भो में प्रस्तुत किया, इससे युवा व प्रबुद्ध वर्ग विशेष रूप से अध्यात्म के प्रति आकृष्ट हुआ।

युग प्रवर्तक–एक दृष्टि से देखा जाए तो वे एक प्रवर्तक धर्मगुरू थे उन्होनें देश की गुलामी को भी देखा था, आजादी की लड़ाई को भी देखा था और देश को आजाद होते हुए भी देखा

*व्याख्याता हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

था यानि देश के बच्चे बच्चे में उमड़ते हुए आजादी के खुमार और उसके उतार के भी वे साक्षी थे स्वातंत्र्योत्तर भारत की स्थिति, समस्याओं एवं संभावनाओं का उन्होनें सूक्ष्म अध्ययन किया।

उन्होंने अनुभव किया, राजवंशीय शासन व्यवस्था, धर्माधता, अमीर और गरीब के बीच गहरी खाईयॅा, छूआछूत, शोषण, अत्याचार, उत्पीड़न, सामाजिक, नैतिक मूल्यों का विघटन ये ऐसे धारदार हथियार है, जिनसे मनुजता क्षत–विक्षत हो रही है। उनका कारूणिक अंतःकरण द्रवित–उद्धेलित हुआ। घायल मनुजता के परिशीलन हेतु उन्होंने संजीवनी बूटी के रूप में अणुव्रत आचार संहिता का प्रवर्तन किया।

व्यक्ति और समाज की समस्याओं को एक–एक कर उघाड़ा, उनके समाधान के सूत्र दिए समाज और देश की तस्वीर को तराशने/उकेरने का श्रम–साध्य कार्य किया। झूॅठ, बेईमानी, छल–कपट, चारित्रिक दुर्बलता तथा धार्मिक आडम्बरों का खुल कर विरोध किया। वर्ग, जाति, भाषा, प्रान्त, धर्म–सम्प्रदाय आदि भेदभाव से ऊपर उठकर समानता के धरातल पर स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु उन्होंने अणुव्रत के रूप में समग्र जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। राष्ट्र को विश्व–बधुंत्व के सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। 'नयामोड़' का अभियान चलाकर समाज के कॉम्पलेक्स को संयम, सादगी, समता एवं सांस्कृतिक मूल्यों से सजाने/संवारने की प्रेरणा दी। उनकी साधना और वाणी केवल 'स्वांतः सुखाय' ही नहीं थी।

उनकी सोच निरंतन बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की परिक्रमा करती रहती थी। उनके चिंतन में, लेखन में, प्रवचनों में सामाजिक/ धार्मिक आडम्बरों को खुली चुनौती थी। वे समाज सुधार के लिए कृत संकल्प थे। इसलिए सामाजिक विषमताओं/विरोधाभासों पर उन्होंने तीव्र प्रहार किए वे समाज और धर्म के भ्रष्ट ठेकेदारों के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा के अक्षय स्त्रोत थे। धर्म के बाह्मचारों का भी वे जमकर विरोध करते थे।

स्वार्थ, सत्ता की भूख एवं महत्त्वाकांक्षाओं से प्रेरित राजनीति व राजनेताओं को भी वे कड़ी से कड़ी बात कहने नहीं सकुचाते थे क्योंकि राष्ट्रहित के लिए वे गंभीरता से सोचते थे।

यही कारण है कि देश के समकालीन सभी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर अन्य वरिष्ठ राजनेता उनके व्यक्तित्व, विचार, विचार एवं व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित थे शीर्षस्थ नेताओं एवं लोकसभा अध्यक्षों के आग्रह भरे अनुरोध को स्वीकार कर उन्होंने कई बार संसद भवन जाकर सांसदों को संबोधित किया उन्हें दायित्व बोध दिया क्योंकि उनके पास प्रशासनिक अनुभवनों की विपुल सम्पदा थी अनुशासन की क्रमबद्धता थी।

एक सफल प्रवचनकार, गीतकार–आचार्य श्री तुलसी प्रख्यात प्रभावशाली प्रवचनकार थे उनके प्रवचनों में सत्य–निष्ठा, अंहिसा, विश्वशान्ति, मैत्री, करूणा, क्षमा, संयम, सरलता आदि मानवीय/ आध्यात्मिक मूल्यों की गूंज थी। वे जो कुछ कहते अपने अनुभव के आधारपर कहते थे अपनी बात को हर बार नए संदर्भ और नए अंदाज में प्रस्तुत करना उनकी विलक्षणता थी। उनके प्रवचन सही जगह पर चोट करने वाले होते थे। उनके गीतों में भी अद्भुत बेधकता थी उनके गीत आज भी घर–घर में और स्वर–स्वर में गुंजित है।

उनमें युग की धारा को मोड़ने की, अंध–विश्वासों की मजबूत बेड़ियों को तोड़ने की सामर्थ्य है। वे जीवन व त्तों के भी कुशल शिल्पी थे अपने काव्य ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने समग्र मानवीय अनुभूतियों को सफलता के साथ प्रस्तुत किया है उनके काव्य साहित्य की धाराओं में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, तत्त्व–दर्शन, जीवन–शैली आदि तत्त्व सहज प्रभावित हुऐ है।

आधुनिक तेरापंथ के महान निर्माता–आचार्य श्री तुलसी विकास के शलाखा पुरूष थे उनका आलोकधर्मी व्यक्तित्व, कर्त्तव्य विकास की दिशा में प्रस्थित असंख्य लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत था बीसवीं सदी की सर्वोच्च–उपलब्धि मानी गई है– वैज्ञानिक और तकनीकी विकास किन्तु विज्ञान की खोजें आज तक मनुष्य के सर्वांगीण विकास की तकनीक विकसित नहीं कर सकी वैज्ञानिक परिवेश में मानवीय विकास की अवधारणा आज भी अधूरी और त्रुटिपूर्ण है आचार्य श्री तुलसी ने मानवीय विकास को समग्रता से परिभाषित किया उसके विकास की रेखाएं स्पष्ट की प्रेक्षाध्यान और जीवन–विज्ञान उनके इसी चिंतन की निष्पत्ति है वे अध्यात्म और विज्ञान–इन दो परस्पर विरोधी ध्रुवों को मिलाने वाले सेतु थे सुपरमेन थे वे अध्यात्म और विज्ञान– इन दो परस्पर विरोधी ध्रुवों को मिलाने वाले सेतु थे। सुपरमैन थे। वे आधुनिक तेरापंथ धर्मसंघ के महान निर्माता थे, व्यक्तित्व निर्माण की उनकी कला और प्रक्रिया बेजोड़ थी उनके सृजन कौशल में जहां आचार–विचारगत ऊॅचाई का सम्मान था, वहॅा बहुमुखी प्रतिभाओं का मूल्यांकन भी था। आज के मनुष्य की सबसे बड़ी पीड़ा यही है कि उसकी क्षमताओं का मूल्यांकन करने वाली दृष्टि कम लोगों के पास है। इसीलिए सुयोग्य व्यक्तियों की छटपटाहट कभी मुखर हो जाती हैः

"यूँ तो बक्शी जिंदगी ने बहुत इज्जत मुझे।
उम्र भर लेकिन न मिल पाई, मेरी कीमत मुझे।।

आचार्य श्री तुलसी इसके अपवाद थे यही कारण है कि उनकी निर्माण शाला में समर्थ व्यक्तियों की एक फौज सी खड़ी हो गई। आचार्य पद का विसर्जन करचुकने के बाद भी संघ और संघीय–निर्माण की तड़प उनके रेशे–रेशें में रमी हुई थी। सुबह चार बजे से ग्यारह बजे तक संघ के छोटे–बड़े सदस्यों को अनेक संदर्भो में शिक्षण–प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देते–देते ही उस ज्योति–पुंज ने पार्थिव शरीर त्यागा था।

वे एक तेजस्वी संत थे। बाहर भीतर से सुन्दर, दिल से साफ, दिमाग से दुरूस्त भक्तों के लिए परम वत्सल तो गलत के विरोध में प्रचंडद्व करूणाशील इतने कि मक्खन की तरह मुलायम और एक अनुशास्ता के रूप में कठोर भी, प्रखर भी चट्टान की तरह दुर्लध्य भी वे एक तटस्थ समालोचक भी थे और लचीले भी इतने कि समय पर अपनी सोच और दिशा को बिना किसी झिझक के बदल भी लेते थे। दृढ़ इच्छाशक्ति और

साहसबस उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। जो भी काम हाथ में लेते उसे पूरा किए बिना विराम नहीं लेते। वे एक ऐसे करिश्माई व्यक्तित्व के स्वामी थे कि उनकी अग्रिम योजनाओं का पूर्वानुमान लगा पाना किसी के वश की बात नहीं थी। उनका तिरोभाव राष्ट्र की नैतिक चेतना के जागरण हेतु सर्वात्मनासमर्पित एक महापुरुष का महाप्रयाण था लगता है आचार्य श्री को अपने प्रयाण का पूर्वाभास जरूर हो गया था।

इसलिए उन्होनें अपनी उपस्थिति में ही संघ का नेतृत्व उन समर्थ हाथों में थमा दिया जिन्हें वे जीवन भर मजबूत करते रहे थे और जिनके संचालन कौशल से वे पूर्णतः विश्वस्त थे वे हैं– प्रज्ञापुरुष अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी आचार्य श्री महाप्रज्ञ गुरूदेव श्री तुलसी के विचारों के सफल भाष्यकार है। उनके द्वारा प्रवर्तित अभिनव अणुव्रत धर्मचक्र को सतत गतिशील बनाए हुए हैं महाप्रज्ञ का प्रज्ञा–रथ देश–विदेशों में अध्यात्म की ऊर्जा को प्रसारित करने में आशातीत सफल हो रहा है। वे आचार्य तुलसी के सपनों और संभावनाओं को नया आकार, नया निखार दे रहे हैं।

लगता है आचार्य श्री तुलसी आज भी जीवत है, क्योंकि जो व्यक्ति अपनी सतत् प्रज्वलनशीता से, सार्थक क्षणों से और कीमती सांसों से जीवन और मृत्यु के अंतराल को मूल्यवान बना देता है, मौत भी उसके अस्तित्व को मिटा नहीं सकती वह मृत्युजंयी बन जाता है फिर भी भारतीय समाज सदियों तक आचार्य श्री तुलसी का अभाव महसूस करेगा।

जातिवाद, धार्मिक कट्टरता से उपजे आंतकवाद, अंध ाविश्वास और मूल्यहीनता के विरूद्ध निरंतन सं ार्धरत रहने वाले तुलसी भारतीय समजा के पटल पर सदा प्रासंगिक बने रहेंगे, धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाले लोकतांत्रिक देश भारत में आज जात–पांत पर आधारित संगठन जहॅा कुकुरमुत्तों की भांति उभर रहे हैं, वहॅा अनेकता में एकता का पाठ पढ़ाने वाले तुलसी जैसे निर्भीक संतों की अधिक जरूरत है, जो रूग्ण समाज की रूग्णता को पहचाने, समाज के सामने प्रकट करे और उसका उचित उपचार भी कर सकें।

बीसवीं सदी के अध्यात्म क्षितिज पर पूरी तरह छाए रहने वाले उस प्रखर व्यक्तित्व की प्रासंगिकता या सार्थकता इक्कीसवीं सदी में भी कम नहीं होगी। उनके द्वारा प्रस्तुत अध्यात्म और नैतिकता पर आधारित जीवन दर्शन अगली सहस्त्राब्दी में भी विश्व मानव को शान्ति, अहिंसा, भाईचारा और तनावमुक्त जीवनशैली का प्रशिक्षण देता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

शुक्ल रामचन्द्र– हिन्दी साहित्य का इतिहास हिन्दी साहित्य का इतिहास– नगेन्द्र. कवितावली,गीतावली, रामचरित्र मानस, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी – तुसलीदास.